टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

पीस ऑफ माइन्ड चैनल २४ घंटे

राष्ट्रीय सहारा समय : सुबह 6.55-7 बजे, दोप.2.50-3 बजे
आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे
जी-24 (छत्तीसगढ़): सुबह 5.30 से 6.00 बजे
जीटीवी (तमिल) : दोप. 2.30 बजे से 6 बजे (सोम. से शुक्र)
दीसा चैनल : सुबह 6.10 से 6.40

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)
उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र

ईटीवी – उड़ीसा, कर्नाटक –सुबह 5.30–6.00 (प्रतिदिन)

BSNL IP TV (Divine Box)
Om Shanti Channel (24 Hours)

EASY Box (BoL) (प्रतिदिन)
सुबह 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक

मो टीवी – तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक
मो म्युजिक – तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक
भक्ति – तेलगु सुबह 10.00

विदेश –आस्था इंटरनेशनल में – यूके – 8.40 जीएमटी
यूएसए व कनाडा 8.40 ईबे, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्युजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए समर्क करें – 9414152296

ओम शान्ति मीडिया का नवीन संकलन ''कथा सरिता'' एवं ''हैप्पीनेस इंडेक्स'' अब उपलब्ध है

पाठकों की विशेष मांग पर ओम शान्ति मीडिया में निरंतर प्रकाशित हो रहीं शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह **''कथा सरिता''** तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह **''हैप्पीनेस इंडेक्स''** अब उपलब्ध है। ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

समय मूल्यवान ...

पेज 2 शेष ...

नशे में रहो, ज्ञान की धारणा में रहो तो फिकर आ नहीं सकता।

कोई कहते हैं बाबा कोशिश तो करते हैं लेकिन जब सरकमस्टांश बनते हैं तो जिस शक्ति की जरूरत होती है, वह शक्ति साथ नहीं देती है। हम बुलाते हैं वह आती नहीं है। समझो कोई बात में मुझे सहनशीलता चाहिए, मैं सहनशीलता का आह्वान कर रही हूँ लेकिन वो सहनशक्ति आती नहीं है। बाबा ने कहा - कारण ? जब तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो तो शक्ति तो तुम्हारी ही हुई ना! तुम्हारे ऑर्डर पर चलनी चाहिए। मालिक हो ना, मास्टर हो। लेकिन शक्ति नहीं आयी कारण ? पहले यह देखो अपनी सीट पर सेट हो ? सीट है मास्टर सर्वशक्तिवान, अगर उस सीट पर सेट नहीं होंगे और बिना सीट के ऑर्डर करेंगे तो कोई मानेगा नहीं। सीट पर सेट होके आर्डर करो फिर देखो तो शक्ति बंधी हुई है। तो सीट पर सेट होना भी तो आवे। तो योग द्वारा ही होगा, बिन्दी लगायेंगे तभी होगा। फुलस्टॉप लगाओ तभी तो शक्ति काम करेगी। तो बाबा की छोटी-छोटी बातें हम बुद्धि में याद रखें और समय पर यूज करें। अगर समय पर यूज नहीं करते हैं तो पुरुषार्थ करते हैं लेकिन उस पुरुषार्थ का फल नहीं मिलता है फिर कहां-कहां दिलशिकस्त हो जाते हैं। मेरे से होगा नहीं, अरे ! होगा क्यों नहीं, परमात्मा के बच्चे हैं और किससे होगा क्या ? बाबा ने कहा है आप हिम्मत के पंखो से उड़ो। सबके पास हिम्मत और उमंग-उत्साह के पंख होने चाहिए। हिम्मत और उमंग-उत्साह यह कभी जीवन से जाना नहीं चाहिए। जैसे खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, उमंग-उत्साह होगा तो खुशी जरूर होगी। तो खुश रहो और खुश करो। संतुष्ट रहो और दूसरे को भी संतुष्ट करो।

सारे दिन का अच्छा वा बुरा समाचार रोज रात को बाबा को देना चाहिए। पुरुषार्थ करते कुछ गलती भी तो जाए तो वो यहां ही बाबा को सुना दो तो वहां धर्मराजपुरी में नहीं जाना पड़ेगा क्योंकि डायरेक्ट बाबा को दे दी। देने के बाद भी वो गलती हो जाती है क्योंकि माया घड़ी-घड़ी आयेगी, तो आपको यह मदद मिलेगी, मैंने बाबा को दे दी, तो दी हुई चीज वापस ली नहीं जाती है। तो रोज सोने से पहले बाबा को अपना सारा हिसाब देना चाहिए। दिमाग खाली करके सोयेंगे तो कोई स्वप्न भी नहीं आयेगा, बहुत मीठी नींद आयेगी। तो ऐसे पुरुषार्थ करके अपने आपको चेक करने की आदत डालो। सिर्फ चेक नहीं करना चेक करने के बाद चेंज भी करना।

अंत निशानी है नये युग के प्रारंभ की

कई बार लोग यह सोचते हैं कि इतना घोर पापाचार का युग कलियुग, सतयुग में कैसे बदल जायेगा! जिस प्रकार घोर अंधेरी अमावस्या की रात सुनहरी सुबह में स्वत: ही परिवर्तित हो जाती है। ये संसार का चक्र ही ऐसा है। जो घोर अंधेरी रात भी सुनहरी सुबह में कब बदल जाती है, पता ही नहीं चलता। कोई सारी रात भी बैठ जाये देखने के लिए कि सुबह कैसे होती है, उसे यह पता ही नहीं चलता है।

कुदरत की रचना में ऐसा क्रम बना हुआ है कि परिवर्तन स्वत: ही होने लगता है और मनुष्य उसे समझ नहीं पाता है। ठीक इसी प्रकार, घोर पापाचार की दुनिया कलियुग को भी सतयुग में परिवर्तन होना ही है। और यह परिवर्तन करना कोई मनुष्य के वश की बात नहीं है। युग परिवर्तन से पूर्व ही परिवर्तन के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। आज चारों ओर मनुष्य की जो मनोवृत्ति है वह अति की ओर जा रही है। कोई भी चीज जब अपने अति की ओर जाती है तो उसका अंत होता ही है और अंत ही निशानी है नये प्रारंभ होने की। क्योंकि ये चक्र है। इसलिए सारे लक्षण स्पष्ट कर रहे हैं कि किस प्रकार इस संसार का परिवर्तन होता जा रहा है। मनुष्यात्माओं की मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन कितना तीव्र गति से हो रहा है। यह स्पष्ट देखा जा सकता है। आज विदेशों में देखों तो छोटे-छोटे बच्चों में भी मानसिकता में कितनी विकृति आ गयी है। अभी कुछ ही समय पहले मुम्बई में हादसा हुआ और टी.वी. पर जब उनके चेहरे दिखाए गए तो उन चेहरों को देखकर लगता था कि क्या इनके बच्चों में इतनी विकृति हो सकती है!! हरेक के मन में ये प्रश्न था कि ये छोटे-छोटे मासूम बच्चे जिनके सामने तो अभी पूरी जिंदगी बाकी है और उनमें इतनी विकृति आ जाये। कहने का भावार्थ यह है कि कलियुग अब अपनी अति में पहुंच चुका है। और अति अंत की निशानी होती है और अंत निशानी है, नये युग के प्रारंभ की।

आज से तीस साल पहले के समाज के लोगों की मनोवृत्ति और आज की दुनिया में समाज के लोगों की मनोवृत्ति के अंदर कितना परिवर्तन आ गया है। यह स्पष्ट दिखाई देता है। अब समय हमें ये संकेत दे रहा है कि अब हमें भी अपने अंदर परिवर्तन को तीव्र रूप से अपनाने की आवश्यकता है। नहीं तो हमें समय का शिकार होना पड़ेगा। यदि हम समय का शिकार न होना चाहते हो तो कम से कम अपनी मानसिकता में उस परिवर्तन को अपनाएं जिससे कि आने वाले समय को पार करना सहज हो जायेगा। अगर हम समय के संकेत को समझेंगे नहीं और उसके विपरीत दिशा में चलते रहेंगे, तो समय बड़ा बलवान है, वह किसी के भी अस्तित्व को मिटा सकता है। इसलिए समय को दूसरे शब्दों में काल भी कहा गया है।

अगर हमने समय के संकेत को समझते हुए परिवर्तन को नहीं अपनाया, तो समय हमें परिवर्तन होने के लिए मजबूर कर देगा और वह समय बड़ा दर्दनाक होगा। क्योंकि भीतर से परिवर्तन करने की इच्छा है नहीं और यह समय की मजबूरी है कि हमें परिवर्तन होना पड़ रहा है। उसके बावजूद भी अगर परिवर्तन को नहीं अपनाया तो क्या होगा ? कहा जाता है कि समय काल का तो क्या महाकाल का भी रूप धारण कर लेता है और उस व्यक्ति के अस्तित्व को ही मिटाकर रख देता है। इसलिए समय की गति किस तरह चल रही है ? समय आपको क्या संकेत दे रहा है ? समय हमसे किस प्रकार का परिवर्तन चाह रहा है ? क्योंकि यह युग परिवर्तन का समय चल रहा है। काल परिवर्तन हो रहा है। तो अब ये काल भी हमसे एक परिवर्तन की चाहना रखता है। फिर भी हम बेफ्रिकर की तरह चलते जा रहे हैं और हम समय का शिकार बनते जा रहे हैं।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

इसलिए इस परिवर्तन के गुह्य रहस्य को समझने की आवश्यकता है।

भगवान ने कहा है कि जब कल्प परिवर्तन का समय आता है तब मैं इस धरा पर अवतरित होता हूँ। ''यदा यदा ही धर्मस्य.....'' तब परमात्मा कहते हैं कि जब मैं मनुष्य रूप में अर्थात् अति साधारण रूप में अवतरित होता हूँ तो बहुत कम लोग मुझे पहचान पाते हैं। क्योंकि इस युग में यदि भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हो तो लोग उसको कार्य ही न करने दें। आज कई महान आत्मायें भी जो करना चाहते हैं, तो लोग ऐसे उनके पीछे लग जाते हैं, जो उनको अपना कार्य ही नहीं करने देते हैं। इसी तरह भगवान भी अगर श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित होगा, तो लोग उनकी पूजा करने के लिए ऐसे ही पीछे लग जायेंगें। जो वो पूजा कराते-कराते समय बीत जायेगा तो वो अपना कार्य कब करेंगे। यह समझने की बात है। तो इसलिए कहा कि जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूँ तो मूर्ख मेरा उपहास करते हैं। क्योंकि वे भगवान को समझ नहीं पाते हैं और वे मुझ परमेश्वर के दिव्य रूप को नहीं जानते। क्योंकि वो मोहग्रस्त आसुरी स्वभाव वाले होते हैं। ..क्रमश.